Ila Prasad,
P.O. Box 680902
Houston, TX 77268
Email: ila_prasad1@yahoo.com

भारतीय भाषाओं के माध्यम से व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा: चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में भाषा की अहम भूमिका है। समाज के सर्वांगीण विकास के लिए एक सशक्त भाषा का होना आवश्यक है, एक ऐसी भाषा जो तकनीक के विकास के साथ विज्ञान और व्यावसायिक विषयों के शिक्षण की चुनौती का सफ़लतापूर्वक वहन कर सके। यह समझ हमारे अग्रजों को थी अन्यथा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने यह न लिखा होता

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल

बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥

विविध कला शिक्षा अमित ज्ञान अनेक प्रकार।

सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार॥

वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे निरंतर कठिन और जटिल होती जा रही यान्त्रिकी, सम्प्रेषण और हाई टेक की नई शब्दावली के साथ सामंजस्य बिठाना और उसकी समझ रखना भारत के बहुभाषी समुदाय के लिए अत्यधिक कठिन है। यह सर्वविदित तथ्य है कि अब भी भारत की कुल जनसंख्या का १५-२० प्रतिशत ही अंग्रेजी समझता और बोलता है, जिसका अधिकांश महानगरों में रहता है। [१] अंगरेजी में तकनीकी विषयों की पढाई करनेवालों का प्रतिशत और भी कम होगा। मैं अपने निजी अनुभव से जानती हूँ कि एक विदेशी भाषा पर अधिकार पाने में, कितना समय नष्ट होता है और उस भाषा में अपने को अभिव्यक्त करने में सक्षम न होने के कारण हम सबकुछ जानते हुए भी किस तरह पिछड़ जाते हैं।

स्वभाषा में शिक्षण से कितनी प्रगति हो सकती है इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण जापान है। द्वितीय विश्व युद्ध में हार के पश्चात जापान की सरकार ने एक उच्च स्तरीय कमि्टी का गठन किया जिसे हार के कारणों का विश्ल्लेषण करने का दायित्व दिया गया। उस कमिटी के सुझाव के आधार पर जो पहला निर्णय लिया गया वह समस्त विज्ञान एवं तकनीक की पुस्तकों का जापानी भाषा में अनुवाद था। अगले कुछ ही वर्षों में यह कार्य सम्पन्न कर डाला गया और आज जापान की प्रगति किसी से छुपी हुई नहीं है। कारण स्पष्ट है, जापानी विदेशी भाषा सीखने में अपना समय नष्ट नहीं करते।

भारत की समस्या जापान या अन्य किसी भी देश से इस अर्थ में भिन्न है कि भारत जैसा भाषिक विविधता वाला देश दुनिया में कोई नही है। अमेरिका में दुनिया भर से आए हुए लोग हैं किन्तु भाषा के स्तर पर कोई समझौता नहीं हैं। अमेरिका में स्पैनिश दूसरे नम्बर पर है किन्तु शिक्षण का माध्यम सबों के लिए अमेरिकन इंगलिश ही है।

मैंने पाँच वर्षों तक अमेरिका के स्कूल में ए पी फ़ीजिक्स(Advanced Placement Physics) पढ़ाया। मेरी कक्षा में ऐसे स्पैनिश छात्र- छात्राएँ भी थे जो अंग्रेजी बिल्कुल नहीं समझते थे। मुझे उनके लिए कमरे की दीवारों पर भौतिकी से सम्बन्धित सभी मुख्य शब्दों का स्पैनिश अनुवाद उपलब्ध रखना था। यह मेरा चयन नहीं था, वरन कानून है। अमेरिका में अंग्रेजी न जाननेवाले बच्चों को स्कूल मे प्रवेश के साथ ही चिन्हित कर लिया जाता है और उन्हें ELL(English Language Learner) की कक्षा में डाल दिया जाता है। इन छात्र- छात्राओं को अन्य विषयों के साथ- साथ अंग्रेजी भी सीखनी होती है और सालाना उनके अंग्रेजी ज्ञान की राज्य स्तर पर परीक्षा होती है। यह परीक्षा पढने, लिखने के साथ अंग्रेजी बोलने के स्तर का भी निर्धारण करती है। स्कूली शिक्षा खत्म होने तक वे अंग्रेजी बोलने -लिखने -पढने लगते हैं और अपनी रुचि का विषय चुनकर आगे की शिक्षा के लिए निकल जाते हैं।

भारत में भी हिन्दी या अन्य भाषाओं में शिक्षण की बात होती है तो उसकी नींव मजबूत करने का पाठ्यक्रम स्कूल में होना चाहिए। आज जो खिचड़ी हिंदी सब ओर परोसी जा रही है, वह नींव को कमजोर करने का काम करती है, मजबूती नहीं देती।टेलीविजन पर हम "एक छोटा सा अंतराल " सुनते थे | उसे हटा कर ब्रेक शब्द ठूँस दिया गया | ऐसे ही कई अन्य उदाहरण हमारे चारों और भरे पड़े हैं | यहाँ पर कई बार यह तर्क दिया जाता है कि अंग्रेजी के शब्द सरल हैं, जुबान पर चढ़ चुके हैं तो उनकी जगह अनूदित जटिल शब्दों का प्रयोग क्यों किया जाए। उदाहरण के लिए इमेजिंग के लिए प्रतिबिम्बन कठिन शब्द नहीं है किन्तु लोग इमेजिंग बोलते मिल जाते हैं।

वास्तविकता यह नहीं है कि हिंदी कठिन है या अनूदित शब्द कठिन हैं, हमारे मुँह में अंगरेजी ठूँसी जा रही है। कोई भी शब्द कठिन या जटिल नहीं होता, उसका व्यवहार में न होना उसे कठिन बनाता है।शब्द मरते भी हैं यदि उनका उपयोग न किया जाए | विश्व की कई भाषाएँ इसी तरह विलुप्त हुई हैं या उनका क्रियोलीकरण हुआ है | हमें सावधान होने की आवश्यकता है | जो भारतीय भाषाओं के शब्द हैं, जिन शब्दों के लिए अंग्रेजी मे शब्द नहीं हैं, उनका यथावत उपयोग विदेशियों की विवशता हो सकती है, किन्तु हमें किसी विवशता का अनुभव करने की आवश्यकता नहीं है। स्मरण रहे कि हमारी भाषा और उसकी वर्णमाला अंग्रेजी और अन्य वैश्विक भाषाओं की तुलना में अधिक समर्थ और समृद्ध है। इसलिए अनुवाद का कोई विकल्प नहीं है और हम इस चुनौती को सहर्ष स्वीकार करेंगे।

भारत में जब विज्ञान या तकनीक की स्वभाषा में शिक्षा की बात होती है तो हमें स्मरण रखना होगा कि हम हिंदी के साथ- साथ उन सभी भाषाओं में अनुवाद की बात कर रहे हैं जो राज्य स्तर पर बोली जाती हैं। यह एक बेहद चुनौतीपूर्ण कार्य है । एक कारण यह है कि इन सभी भाषाओं की वर्णमाला भिन्न है।अंग्रेजी वर्णमाला में २६ अक्षर हैं। अधिकतम अनुवाद अंग्रेजी से हिंदी में होते है। हिंदी वर्णमाला के ५० अक्षर आराम से यह दायित्व उठा सकते हैं। यही स्थिति अन्य भारतीय भाषाओं की है, असमिया को छोड़ कर जिसकी वर्णमाला मे २५ अक्षर हैं। किन्तु सभी भारतीय भाषाओं की वर्णमाला में अक्षरों की भिन्न- भिन्न संख्या है।[२] स्वर विज्ञान(फ़ोनेटिक्स) की दृष्टि से भी भिन्नता है। ऐसी स्थिति में लिप्यन्तरण और अनुवाद कठिन हो जाता है।भाषा का पूर्ण ज्ञान रखनेवाले अनुवाद में दक्ष व्यक्ति ही सही अनुवाद कर सकते हैं।

दूसरा कारण यह है कि जो सारे नए शब्द विज्ञान और तकनीक ने हमें दिए हैं और जिसमें प्रतिदिन कुछ और शब्द जुड़ रहे हैं उनमें से कई का सटीक पर्याय हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध नहीं है। हमें शब्द -सृजन की आवश्यकता है । यहाँ पर दो विकल्प हैं- १. हम तकनीकी शब्दों को उनके मूळ रूप अंग्रेजी में रहने दें और व्यवहार में लाएँ। २. सारे तकनीकी शब्दों का भी हिन्दी और अन्य भाषाओं में अनुवाद किया जाए जो वस्तुत: शब्द- सृजन का क्षेत्र है।

यहाँ पर तर्क यह दिया जा सकता है कि क्योंकि वे शब्द भिन्न प्रौद्योगिकी और तकनीक से जुड़े हैं तो उस आयातित प्रौद्योगिकी को समझने के लिए उन्हीं तकनीकी शब्दों का उपयोग आसान होगा क्योंकि निर्देश पुस्तिका भी अंग्रेजी में ही होती है या अन्य विदेशी भाषाओं के साथ-साथ अंग्रेजी में होती है। समस्या यह है कि शब्दों की यह रूढ़ अवधारणा, हमारी समझ को कई बार विकसित होने से रोक देती है और हम शब्दों का गलत अर्थ मे प्रयोग करने लगते हैं। अपनी भाषा में अनूदित शब्दों का व्यवहार भाषा को जीवित रखता है और भाषा के विकास में भी सहायक होता है।

मेरी जानकारी में भारत सरकार का वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग अनुवाद और शब्द -सृजन के क्षेत्र मे लगातार सक्रिय है और उसका लाभ जन -सामान्य को मिल रहा है। भारत सरकार के वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली संकलन का उपयोग मैं खुद करती रही हूँ। अंग्रेजी में लिखे वैज्ञानिक आलेखों के अनुवाद में मैंने इसे बहुत उपयोगी पाया।

भारत की बैंकिंग प्रणाली पूरे तौर पर हिंदी में काम करने में सक्षम है और इसका श्रेय आई आई टी कानपुर के छात्रों को जाता है जिन्होंने "जिस्ट कार्ड " बनाया | यह स्थिति अन्य भारतीय भाषाओं में भी है | उच्च प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जो कुंजी पटल आज उपलब्ध है उसके माध्यम से अंग्रेजी सहित सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में काम किया जा सकता है और लिप्यंतरण भी संभव है |[3]

भाषा- शिक्षण और भाषा –प्रौद्योगिकी का महत्व बढ़ने के साथ शिक्षण –प्रौद्योगिकी(Educational Technology) और भाषा- प्रौद्योगिकी(Language Technolgy) जैसे विषयों का पाठ्यक्रम में समावेश हुआ है जो काफ़ी चुनौतीपूर्ण है| कम्प्यूटर साधित भाषा- शिक्षण एवम आनलाइन शिक्षण के लिए इंटरैक्टिव मल्टी मीडिया कार्यक्रमों के निर्माण की आवश्यकता है। भारत में एन्ड्रायड उपलब्ध है । वर्चुअल भाषा शिक्षण ,मोबाइल शिक्षण गैजेट आदि पर पेशेवर समुदाय द्वारा काम करने की आवश्यकता है। [4]

यूनीकोड फ़ॉन्ट के आने के साथ कम्प्यूटर पर किसी भी भाषा में लिखना आसान हो गया। मेरी जानकारी में कोविड के दौरान भारत में भी विश्वविद्यालय स्तर पर ऑनलाइन पाठ्यक्रम उपलब्ध कराए गये किन्तु ऑनलाइन लैब की सुविधा नही थी। तकनीक के इस क्षेत्र में काम करने की आवश्यकता बनी हुई है। आई आई टी जैसे शिक्षण संस्थानों के प्रोफ़ेसरों के लेक्चर के वीडियो स्थानीय भाषा में उपलब्ध कराए जाने की स्वागत योग्य पहल हुई है। जो छात्र अंग्रेजी में कमजोर होने के कारण अपने विषय में अच्छा नही कर पाते थे उनकी परेशानियों का हल निकल आया है। आई आई टी के ही सहयोग से हिंदी भाषा और संप्रेषण के पाठ्यक्रम यू जी सी के पोर्टल पर उपलब्ध होंगे, ऐसी सूचना भी पढ़ी।[5]

शिक्षण के लिए स्मार्ट्बोर्ड का प्रयोग भारत में आरम्भ हुआ है किन्तु मुझे नहीं लगता कि ब्लैकबोर्ड, कैनवस या डी टू एल(Desire to learn) जैसे लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम अभी भारत में हैं जिसके माध्यम से सभी विषयों की सारी शिक्षा ऑनलाइन दी जा सकती है। इनका उपयोग हम,यहाँ सामान्य, जो ऑनलाइन नहीं हैं , कक्षाओं में भी करते हैं | मेरा अनुमान है कि इस तरह की कोशिशें भारत में चल रही होंगी और कल को वह भी सम्भव हो जायेगा |

बालेन्दु शर्मा दधीच के अनुसार " पिछले एक दशक में भाषाई तकनीकों का लगभग कायाकल्प हो चुका है। मोबाइल क्लाउड, पर्सनल कम्प्यूटर और इंन्टेलीजेंट उपकरणों तक ऐसा कोई क्षेत्र नहीं दिखता जिसमें हिंदी की उपस्थिति न हो। डेटा विश्लेषण, बिग डाटा, आर्टिफ़िशियल इंन्टेलिजेंस आदि तमाम आधुनिकतम क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग हो रहा है। ध्वनि मशीन अनुवाद जैसे क्षेत्रों में भी हिंदी मौजूद है, लेकिन अगर कमी है तो आम यूजर तक इनकी जानकारी पहुँचने की।" [6]

कुल मिलाकर ऐसा लगता है कि वर्तमान भारत सरकार ने व्यावसायिक और कौशल शिक्षा को हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराने को गम्भीरता से लिया है और भारत के तकनीकी संस्थान और यू जी सी जैसी संस्थाएँ इसमें व्यापक सहयोग कर रही हैं। माइक्रोसाफ़्ट और गूगल कम्पनियों अपने लाभ के लिए भारत के बाजार को पहचान चुकी हैं और भारत के आम जन तक अपनी पहुँच बनाने के लिए हिंदी भाषा मे साधन(tools) उपलब्ध करा रही हैं । अमेरिका में प्रधान मंत्री मोदी के भाषण से ज्ञात हुआ कि वर्तमान में गूगल कंपनी का ए आई (अर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) रिसर्च सेण्टर १०० से अधिक भारतीय भाषाओं में अनुवाद की सुविधा पर काम कर रहा है जिससे उन लोगों के लिए भी उच्च शिक्षा के स्रोत खुल सकें जो अंग्रेजी नहीं जानते, अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त कोई अन्य भाषा नहीं जानते | [7] इसका लाभ व्यावसायिक और कौशल शिक्षा से जुड़े हुए लोगों तक पहुँचना तय है | इसका लाभ भी कालान्तर मे आम जन को मिलेगा और हिंदी में व्यावसायिक शिक्षण अपनी पूरी रफ़्तार पकड़ लेगा।

अंत में:

वेद कहते हैं कि यान्त्रिकी को इतनी त्वरा मे मत चलाओ कि सर्वत्र यमराज का ही राज्य हो जाए। क्योंकि "त्वरशिव्द राजा(ऋग्वेद ७.४१.२) को ही यमराज कहते हैं।[8] कम्प्यूटरीकृत शिक्षण और अर्टिफ़िशियल इंन्टेलीजेंस के दूसरे पहलू भी हैं जो मानव मात्र के लिए भविष्य में समस्या बनेंगे किंतु

फ़िलहाल तो यह एक अन्धी दौड़ है जिसके साथ कदमताल करना हमारी विवशता है और उस दौड़ मे पिछड़ने से बचने के लिए अपनी भाषा में शिक्षण सर्वोपरि है। उसका कोई विकल्प नहीं है।

****

सन्दर्भ- सूची

1. List of Countries by English- speaking population : en.m.wikipedia.org
2. http:// education.gov.in> files
3. हिंदी का विश्व "आज और कल , डा सविता डहेरिया , विश्व हिंदी पत्रिका , मारीशस २०२२ , पेज १४०
4. भाषा- शिक्षण प्रौद्योगिकी का वर्तमान परिदृश्य : मुद्दे , चुनौतियाँ और समाधान की दिशाएँ, डॉ अनुपम श्रीवास्तव, विश्व हिंदी पत्रिका, मॉरीशस २०२२, पेज ९३-९७
5. हिन्दी भाषा एवम संप्रेषण पाठयक्रम जल्द ही स्वयं पोर्टल पर : अमृत विचार, १५ जून २०२३

http://www.amritvichar.com

6. हिंदी का ई- संसार , डा. रविन्द्र सिंह एवं श्रीमती अरुण कमल, विश्व हिंदी पत्रिका २०२२, पेज ५३-६०
7. http://youtu.be/6bd-yXpC80Y
8. अध्यात्म और कलियुग(हाई टेक्नोलाजी)" , हरिदत्त शर्मा, सौरभ पत्रिका, न्यूयार्क, पेज ८३-८५, जून २०१५